संस्कृतम्

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	*उपयुक्त संसाधन*	*सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)*
• पूर्व पठित शब्दों का स्मरणपूर्वक अवबोध कर उत्तर दे सकते हैं। • पूर्व कक्षा में पढ़े गए संस्कृतभाषा के शब्दों को बोलने में समर्थ हैं। • उत्साहपूर्वक गद्य एवं पद्यों का उच्चारण कर सकेंगे। • लघुवाक्य विन्यास कर सकेंगे। • श्लोकादि पद्यों का योग्य उच्चारण कर सकेंगे। • सूक्तियों के तात्पर्य को समझकर व्यवहार में प्रयोग कर सकेंगे। • पाठ में आए शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेंगे। • सुभाषित श्लोक स्मरण करके सुना सकेंगे। • कर्ता एवं कर्म कारक का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।	एनसीईआरटी द्वारा अथवा राज्यों द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तक, घर में उपलब्ध पठन लेखन सामग्री अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री जैसे इंटरनेट वेबसाइट, रेडियो दूरदर्शन यू ट्यूब (एनसीईआरटी ऑफिशियल) चैनल आदि के माध्यम से संस्कृत भाषा विषयक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।	**पाँचवाँ सप्ताह** (पूर्व कक्षा की गतिविधियों का अनुस्मरण कराएँ साथ ही लिङ्ग, विभक्ति, वचन एवं कारकों के विषय में बताते हुए वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ।) **पठन एवं लेखन भाषण कौशल** • पूर्वकक्षा में पठित विषय का अनुस्मरण कराते हुए पद, वाक्यांश एवं श्लोक लेखन एवं उच्चारण हेतु प्रेरित करें। • लिङ्ग, विभक्ति, वचन एवं कारकों के विषय में बतायें। • व्यावहारिक शब्दों की परिचर्चा करें, यथा – मम नाम प्रकाशः। तव नाम किम्? मम नाम ऋचा। अहं शिशुमन्दिरे पठामि। त्वं कुत्र पठसि ।मठिप येलाद्यवयिर्दोवस हंअ ? सम्प्रति त्वं कुत्र गच्छसि इत्यादि.. विश्वस्य उपलब्धासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषा अस्ति। भाषेयम् अनेकासाम् भाषाणां जननी मता। प्राचीनयोः ज्ञानविज्ञानयोः निधिः अस्यां सुरक्षितः। संस्कृतस्य महत्त्वविषये केनापि कथितम्- भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा। विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्, विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः। विद्या बन्धुजने विदेशगमने विद्या परम् दैवतम्, विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या विहीनः पशुः। **छठा सप्ताह** (प्रथम सप्ताह की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए अष्टम कक्षा की पाठ्यपुस्तक का मङ्गल श्लोक के साथ सुभाषित पाठ पढ़ने व स्मरण रखने हेतु प्रेरित करें तथा कर्ता एवं कर्म कारक का वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ) **श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत मङ्गल श्लोक सुभाषित आदि छन्दोबद्ध पाठ का शुद्ध उच्चारणपूर्वक अभ्यास कराएँ। • पाठांश में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। • पाठ में विद्यमान पाठ्य विषयवस्तु के शुद्ध पढ़ने एवं लिखने हेतु प्रेरित करें, यथा –

		✓ गुणाः गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति, ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः। सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।। गुणज्ञेषु = गुणियों में सुस्वादुतोयाः = स्वादिष्ट जल प्रभवन्ति = निकलती है समुद्रमासाद्य = समुद्र में मिलकर
• पाठगत शब्दों का योग्य उच्चारण कर सकेगें। • पाठ में आये शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेगें। • समानान्तर वाक्यांश लेखन कर सकेगें। • करण एवं सम्प्रदान कारक का वाक्यमें प्रयोग कर सकेगें।		**सातवां सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए अष्टम कक्षा की पाठ्यपुस्तक की प्रेरक संवाद, कथाओं को पढ़ने हेतु प्रेरित करें तथा करण एवं सम्प्रदान कारक का वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ) **श्रवण, पठन एवं लेखन कौशल** • पाठ्यांश का शुद्ध उच्चारणपूर्वक अभ्यास कराएँ। • पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। • पाठ में विद्यमान पाठ्य विषयवस्तु के शुद्ध पढ़ने एवं लिखने हेतु प्रेरित करें, यथा – बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता, कण्टकेनैव कण्टकम्, कः रक्षति कः रक्षितः इत्यादि... • कस्मिंश्चिद् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्...। • अरे परमिन्दर! त्वमपि विद्युदभावेन पीडितः बहिरागतः? आम् एकतः प्रचण्डातपः कालः अन्यतश्च विद्युदभावः परं बहिरागत्यापि पश्यामि यत् वायुवेगः तु सर्वथा अवरुद्धः। सत्यमेवोक्तम्...। कस्मिंश्चित् वने (कस्मिन्+चित्) = किसी वन में क्षुधार्तः (क्षुधा+आर्तः) = भूख से व्याकुल विद्युदभावेन = बिजली चले जाने के कारण अवरुद्धः = रुका हुआ
• पाठगत शब्दों का योग्य उच्चारण कर सकेगें। • पाठ में आये शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेगें। • समानान्तर वाक्यांश लेखन कर सकेगें।		**आठवाँ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ नाटक/निबन्धों/वातावरण सम्बन्धित वार्तालाप को लिखना पढ़ना एवं उसके निहितार्थ को बताएँ तथा अपादान एवं अधिकरण कारक का वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ।)

• अपादान एवं अधिकरण कारक का वाक्यमें प्रयोग कर सकेगें।		**पठन, लेखन एवं भाषण, कौशल-** • पाठ्यपुस्तक में समागत पाठों को पढ़ने एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रेरित करें। • नाटक/निबन्ध के निहितार्थ को भी बोधित करें। • गद्यांशों में आए शब्दों के शब्दार्थ भी छात्रों को बताएँ, यथा– गृहं शून्यं सुतां विना, डिजी भारतम्, संसारसागरस्य नायकाः इत्यादि। • अद्य सम्पूर्णविश्वे डिजिटलइंडिया इत्यस्य चर्चा श्रूयते। अस्य पदस्य कः भावः? इति मनसि जिज्ञासा उत्पद्यते। कालपरिवर्तनेन सह मानवस्य आवश्यकता अपि परिवर्तते।... • के आसन् ते अज्ञातनामानः? शतशः, सहस्रशः तडागाः सहसैव शून्यात् न प्रकटीभूताः। इमे एव तडागाः अत्र संसारसागराः इति।... जिज्ञासा = जानने की इच्छा उत्पद्यते = उत्पन्न होता है परिवर्तते = बदलता है तडागाः = तालाब सहसैव = अचानक ही प्रकटीभूताः = प्रकट हुए
• पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दे सकेगें। • पाठ में समागत शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेंगे। • सामाजिक गतिविधियों को समझकर उसके विषय मे लिख सकेंगे। • समानान्तर अन्य कथानक कह सकेंगे। • पढ़े हुए शब्दों का वाक्य प्रयोग एवं लेखन कर सकेंगे। • सम्बन्ध (षष्ठी विभक्ति) पदों का वाक्यमें प्रयोग कर सकेंगे। • अधिकरण कारक वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।		**नौवाँ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ किसी सामाजिक व्यक्तित्व की जीवनी को लिखना पढ़ना एवं उनके योगदान को बताएँ तथा षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध) एवं अधिकरण कारक वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ।) **पठन, लेखन एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत किसी सामाजिक व्यक्तित्व की जीवनी पढ़ने एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रेरित करें। • अध्ययन से प्राप्त शिक्षा का उल्लेख कराएँ। • निहितार्थ बोधित करते हुये गद्यांशों में आए कठिन शब्दों के अर्थ भी बताएँ। यथा– आर्यभट्टः, सावित्री बाई फुले इत्यादि। ✓ महान् गणितज्ञः ज्योतिर्विच्च आर्यभट्टः। पृथ्वी स्थिरा वर्तते इति परम्परया प्रचलिता रूढिः तेन प्रत्यादिष्टा।... ज्योतिर्विद् = ज्योतिषी रूढिः = प्रचलित प्रथा/रिवाज प्रत्यादिष्टा = खण्डन किया

• पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। • पाठ में आये शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेंगे। • पढ़े हुए शब्दों का वाक्य प्रयोग एवं लेखन कर सकेंगे। • संख्यावाचक पदों का वाक्यमें प्रयोग कर सकेंगे। • उपसर्गों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।		**दसवां सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ प्रेरक कथा/ऐतिहासिक व्यक्तित्व/स्थान/धरोहर (राष्ट्रीय स्मारक) आदि की कथा को लिखना पढ़ना एवं उसके निहितार्थ को बताएँ तथा संख्या वाचक शब्द और उपसर्गों का वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ।) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत कथा सम्बन्धित पाठों को पढ़ने एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रेरित करें। • पाठ से प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में लाने हेतु प्रेरित करें। • निहितार्थ बोधित करते हुये गद्यांशों में आए कठिन शब्दों के अर्थ भी बताएँ। यथा- सप्त भगिन्यः इत्यादि। • अध्यापिका- सुप्रभातम् छात्राः- सुप्रभातम्, सुप्रभातम् अध्यापिका- भवतु अद्य किं पठनीयम्? छात्राः- वयं सर्वे स्वदेशस्य राज्यानां विषये ज्ञातुमिच्छामः। अध्यापिका- शोभनम्। तर्हि वदन्तु। अस्माकं देशे कति राज्यानि सन्ति? पठनीयम् = पढ़ना चाहिए ज्ञातुम् = जानने के लिए कति = कितने
• पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। • पाठ में आए शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेंगे। • पढ़े हुए शब्दों का वाक्य प्रयोग एवं लेखन कर सकेंगे। • पाठों में प्रयुक्त नामपदों एवं क्रियापदों का वाक्यमें प्रयोग कर सकेंगे। • तद्धित, कृत् आदि प्रत्ययों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।		**ग्यारहवाँ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ प्रहेलिका/देशिक वैविध्यता/परस्पर व्यवहार आदि में से किसी विषय में लिखना पढ़ना सिखाएँ एवं उसके महत्व को बताएँ तथा पुस्तकस्थ पाठों में प्रयुक्त नामपदों एवं क्रियापदों का तथा कृत् तद्धित आदि प्रत्ययों का वाक्य प्रयोग करना सिखाएँ।) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत पाठों को पढ़ने एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रेरित करें। • पठित पाठ से प्राप्त विषय का संक्षेप में लेखन कराएँ। • निहितार्थ बोधित करते हुये गद्यांशों में आए कठिन शब्दों के अर्थ भी बताएँ। यथा–प्रहेलिका आदि। ✓ कस्तूरी जायते कस्मात्? को हन्ति करीणां कुलम्? किं कुर्यात् कातरो युद्धे मृगात् सिंहः पलायते।। हन्ति = मारता है कातरः = कायर करीणाम् = हाँथी का

• पाठ में आये शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में बता सकेगें। • पठित पद्यों का शुद्ध उच्चारण कर सकेगें। • पद्यों के पदार्थ को समझने में समर्थ होते हैं। • गीत को यथायोग्य लयबद्ध गायन के साथ पढ़ सकेगें।		**बारहवाँ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ नीतिश्लोक/ संस्कृतगीत/ पद्यकाव्य का शुद्ध उच्चारण तथा सस्वर गायनविधि एवं लिखना पढ़ना सिखायें तथा स्वर वर्णों की सन्धि करना बतायें।) **पठन, लेखन एवं श्रवण कौशल-** • पाठ में समागत नीतिश्लोक/ संस्कृतगीत आदि पद्यों को शुद्ध पढ़ने एवं लेखन हेतु प्रेरित करें। • पद्यगत भावों को सुस्पष्ट रूप से बोधित करें। • पद्यांशों में आये कठिन शब्दों के अर्थ भी बतायें। यथा- नीतिनवनीतम्, संस्कृतगीतम् इत्यादि...। ✓ अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥ ✓ सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्। एतत् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥ अभिवादनशीलस्य = प्रणाम करने के स्वभाव वाले का वृद्धोपसेविनः = बड़ों की सेवा करने वाले के विद्यात् = जानना चाहिए समासेन = संक्षेप में